Date 27/7/20.

Inter IInd year
Lecture no — 98
Assistant Professor, Marwari College, Darbhanga.

TOPIC बिहार के कृषक आन्दोलन
(Peasant Movements of Bihar)

बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है लेकिन बिहार में प्राकृतिक विपदाएँ जैसे बाढ़ और सुखाड़ के साथ ही जमींदारों के शोषण के कारण भी किसानों की हालत अत्यन्त खराब रही है। बिहार में के किसान जमींदारों के शोषण से अत्यन्त परेशान हो चुके थे। जमींदारी के खिलाफ हुए कृषक आन्दोलनों से पहले बिहार में कृषक आन्दोलन ब्रिटिश शासन की नीति के विरोध में हुआ जिसे देश का प्रथम कृषक आन्दोलन भी कहा जाता था। 1789 ई० में चम्पारण में अंग्रेजों ने किसानों से नील की जबरदस्ती खेती कराना प्रारम्भ किया जिसका चम्पारण के किसानों के

साथ ही साथ बंगाल के किसानों ने भी व्यापक विरोध किया।

चम्पारण के बाद दूसरा कृषक आन्दोलन बिहार में 1855-56 में संथाल परगना में हुआ जो हिंसा से परिपूर्ण होने के कारण जल्द ही असफल हो गया।

1917 में चम्पारण में पुनः गाँधी जी से प्रभावित होकर यहाँ के किसानों ने नील की जबरन खेती के विरोध में आन्दोलन प्रारम्भ किया।

नील की जबरन खेती के कारण चम्पारण के किसानों की आर्थिक दशा दिन-प्रतिदिन खराब हो रही थी एवं भू-स्वामियों द्वारा लगान की दर बढ़ाने के कारण भी चम्पारण के किसान आन्दोलित हो उठे।

बिहार के प्रायः सभी किसान आन्दोलन जमींदारी प्रथा के खिलाफ हुए हैं, लेकिन 1935-36 में बिहार में जमींदारी की समाप्ति के लिए स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने जमींदारों के विरोध में व्यापक आन्दोलन किया यह स्वतंत्रता के

समय तक चलता रहा। इसमें सहजानन्द को भारी जन-समर्थन मिलने के कारण उन्हें बिहार के किसान आन्दोलन का नेता भी कहा जाता है। स्वतंत्रता के बाद जमींदारी व्यवस्था का उन्मूलन होने में इस आन्दोलन का एक बड़ा योगदान रहा।